इन्चोली आश्रम दर्शन

इन्चौली 'निजानन्द आश्रम' में पू० महाराज श्री रामरतनदास जी की पुण्य तिथि के अवसर पर हर साल कार्य–क्रम रखा जाता है। इस साल श्री १०८ अखंड पारायण जी का कार्य–क्रम रखा गया। उसमें हाजिर हो कर श्री राजजी महाराज एवं सुन्दरसाथ जी के दर्शन करने के लिये मुझे श्री जगदीश चन्द अहूजा जी के आमंत्रण बड़ौदा आये तब दिया था। आपकी प्रेम भावना देखकर और सुन्दरसाथ का दर्शन करने का मन में उत्कन्ठा होने के कारण मैंने इन्चौली आने की स्वीकृती दे दी थी। तारीख २२-९-८२ को जब इन्चौली को हम आये, कि आश्रम में थोड़े दूर हम लोगों को रोक दिया गया कि सुन्दरसाथ समैया करने आ रहे थे। श्री जगदीश चन्द्र अहूजा जी, श्री कीकुभाई देसाई (प्रेसीडेन्ट, इन्चौली आश्रम. सुन्दर साथ भाई बहनो के साथ में बैंडबाजा सहित गाते बजाते आए। स्वागत की उदात्त–स्नेह–पूर्ण भावना अनोखी थी। आश्रम की रहने की व्यवस्था, भोजन व्यवस्था प्रसंशनीय रही। हर एक कार्यक्रम की शिष्ट भावना श्री जगदीश चन्द्र अहूजा जी का हरेक कार्य में अनुशासन बहुत प्रसंशनीय है। निज मंदिर में जहां पारायण जी और अखंड पाठ का कार्य–क्रम था वहां की व्यवस्था और वातावरण शुद्ध और पवित्र होने से भक्ति का अच्छा भाव उठता है। सुबह पांच बजे से लेकर रात को ठीक ग्यारह बजे तक कार्य-क्रम को ठीक ढंग से तैयार किया है ताकि सुन्दरसाथ परिक्रमा करके, उनकी पूजा करने के बाद में चर्चनी वगैरह का फिर शाम को संध्या, आरती, संगीत और प्रवचन का कार्य–क्रम। कार्य–क्रम समयपर चलने से सुन्दरसाथ को श्री राज जी की वाणी सुनने का अनोखा लाभ मिलता है।

सुन्दरसाथ की भोजन और चाय–नास्ता की सेवा व्यवस्था अनुकरणीय है। खास करके चर्चनी और प्रबचनों में श्री जी की वाणी का ही ज्यादा प्रयोग किया जाता है। यह आश्रम की विशेषता है। आश्रम की प्रगति करने के लिए सुन्दरसाथ स्वेच्छा-पूर्ण आगे आ रहे हैं। पिछले कुछ थोड़े ही वर्षों में तन–मन–धन से श्री जगदीश भाई जी, ट्रस्टीमंडल ने और सुन्दरसाथ ने विकास किया है, इसका परिपाक है। वास्तव में कहें तो इन्चौली आश्रम इसका परिपाक है। वास्तव में करें तो इन्चौली 'निजानन्द

Nijanand App

आश्रम ने' काली नदी के किनारे जंगल में मंगल बना दिया है। और आश्रमके साथ में खेती–बाड़ी वगैरे के विकास में संत श्री जनकदास जी और जिन सुन्दरसाथ सेवा की है यह सेवा का उदाहरण है। निजानंद आश्रम संचालित श्री प्राणनाथ स्कूल भी ध्यानाकर्षक है, जो विद्यार्थीगण को बाल्य-काल से प्रणामी धर्म का संस्कार सिंचन करती है।

मैं गुजरात प्रणामी आचार्य मंडल की ओर से निजानन्द आश्रम के विकास के लिए धन्यवाद देता हूँ। और दिन प्रति दिन विकास यात्रा आगे बढ़े। श्री जी आपके हाथों से और भी शुभ कार्य करावें ऐसी शुभेच्छा है।

श्री १०८ श्री पारायण जी की पूर्णाहुति का मौका मुझे दिया इसलिए अपना और सुन्दरसाथ का आभारी हूँ। प्रणाम !

—रतिभाई भट्ट
प्रमुख
गुजरात प्रणामी आचार्य मंडल

❋

भजन

❋

कु० अवधेश तिवारी
(लखनऊ)

(तर्ज—आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे)

देख तू सम्बन्ध अंगना, अपनी आखें खोल के।
कौन जिमी और कौन खसम, कौन मिलावा है असल। देख...

न तुझे आया सहूर, और न आया इलम,
मूल मिलावा चीन्ह के, कर तैयारी अर्श की। देख तू...

रूहे कहती अर्श अजीम में, प्यार मेरा है बड़ा,
प्रीतम कहता मान कहना, मेरा भी प्यार है बड़ा। देख तू...

अब तुझे मैं क्या कहूं, हो जुदा तो हो पता,
लेकिन मैं मजबूर हूं, तेरे बिन न रह सकूँ,
न तुमने जानी मेरी साहिबी, और न जाना इश्क है। देख तू...

तुम तो रहती हो मुझ बिन, लेकिन मैं बेताब हूं,
जाग रूहे कब चले, अपने वो निजधाम को। देख तू.....

Nijanand App